वियोग–विराग

गरिमा ;समस्तीपुरद्ध बिहार

तुम्हारा जाना
एक रात
बिना आहट
ढ़ले अँधेरे,
चाँद भी
सुरमयी वेदना
और वितृष्णा
का गवाह,
हर निशा
बीतते पहर
उसके पर
डाल पहरे
पूछती पता
उस दिशा
का जिध्र हुआ
तुम्हारा प्रयाण,
टटोलती दिन–रात
'यशोध्रा' चेहरा
अपना, जहाँ
तुमने शायद
छोड़ी हो निशानी
तब जब स्वप्न की सजी बेला
में विचर रही
हो तुम्हारे साथ
जो अकेला ही
विरागी, बँध्न
जीवन का
मान 'उसे'
निकल पड़ा
खोज में
अनंत अन्वेषक
बिना आहट .....